नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मिलेगी नई ऊर्जा

मध्यप्रदेश कैबिनेट का लगभग 40 लाख किसानों को फसल ऋण पर 12 माह तक शून्य ब्याज की सुविधा देने का निर्णय केवल एक वित्तीय घोषणा नहीं है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति देने वाला महत्वपूर्ण कदम भी है.दरअसल, किसानों को अल्पकालीन फसल ऋण पर ब्याज का पूरा भार सरकार वहन करेगी, जिससे खेती की लागत कम होगी और किसानों को समय पर पूंजी उपलब्ध हो सकेगी. भारतीय कृषि आज भी बड़ी संख्या में छोटे और सीमांत किसानों पर आधारित है. खेती के लिए बीज, खाद, कीटनाशक, सिंचाई और मजदूरी जैसी आवश्यकताओं के कारण किसानों को हर सीजन में ऋण की आवश्यकता पड़ती है. यदि यह ऋण महंगे ब्याज पर मिले तो किसान की आय का बड़ा हिस्सा ब्याज चुकाने में चला जाता है. ऐसे में शून्य ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराना किसानों को साहूकारों और अनौपचारिक कर्ज व्यवस्था से दूर रखने का प्रभावी माध्यम बन सकता है.

इस योजना का सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि किसान समय पर कृषि निवेश कर सकेंगे. अक्सर देखा गया है कि पूंजी की कमी के कारण किसान बेहतर बीज या आधुनिक तकनीक का उपयोग नहीं कर पाते. परिणामस्वरूप उत्पादन और आय दोनों प्रभावित होते हैं. सस्ता या ब्याज मुक्त ऋण खेती को अधिक लाभकारी बनाने में मदद कर सकता है. यदि किसान की नकदी स्थिति मजबूत होगी तो उसका सीधा असर ग्रामीण बाजारों पर भी दिखाई देगा. कृषि उपकरण, उपभोक्ता वस्तुएं और स्थानीय व्यापार सभी को इसका लाभ मिलेगा.हालांकि, ऐसी योजनाओं की सफलता केवल घोषणा से नहीं बल्कि प्रभावी क्रियान्वयन से तय होती है. यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि ऋण वास्तव में पात्र किसानों तक पहुंचे. कई बार छोटे किसानों की तुलना में बड़े और प्रभावशाली कृषक संस्थागत ऋण का अधिक लाभ उठा लेते हैं. सरकार और सहकारी बैंकों को पारदर्शी व्यवस्था विकसित करनी होगी ताकि लाभ का समान वितरण हो सके.

दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न वित्तीय अनुशासन का है. ब्याज मुक्त ऋण का उद्देश्य किसानों को राहत देना है, लेकिन इससे ऋण वापसी की संस्कृति कमजोर नहीं पड़नी चाहिए. यदि किसान समय पर ऋण चुकाते हैं तो बैंकिंग प्रणाली मजबूत रहती है और भविष्य में भी किसानों को आसानी से ऋण उपलब्ध होता है. इसलिए सरकार को जागरूकता और निगरानी दोनों पर समान ध्यान देना होगा.

इसके साथ ही यह भी समझना होगा कि केवल सस्ता ऋण कृषि संकट का स्थायी समाधान नहीं है. किसानों की वास्तविक समृद्धि बेहतर बाजार व्यवस्था, फसलों के उचित मूल्य, सिंचाई सुविधाओं के विस्तार, भंडारण क्षमता और कृषि प्रसंस्करण उद्योगों के विकास से आएगी. ऋण राहत एक सहायक उपाय है, लेकिन कृषि सुधारों की व्यापक प्रक्रिया का विकल्प नहीं हो सकती.

फिर भी वर्तमान परिस्थितियों में 40 लाख किसानों को शून्य ब्याज फसल ऋण उपलब्ध कराने का निर्णय स्वागत योग्य कहा जाएगा. यदि इसका लाभ सही किसानों तक पहुंचता है और इसे कृषि क्षेत्र के अन्य सुधारों के साथ जोड़ा जाता है, तो यह केवल किसानों की आर्थिक मदद ही नहीं करेगा, बल्कि मध्यप्रदेश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी नई ऊर्जा प्रदान करेगा. किसान मजबूत होंगे तो प्रदेश की विकास यात्रा भी अधिक सशक्त होगी.

मोदी की व्यापार दृष्टि ने अवसरों के द्वार खोले

पीयूष गोयल

> प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में, भारत को अब एक मजबूत अर्थव्यवस्था और अस्थिर विश्व में एक भरोसेमंद साझेदार के रूप में व्यापक रूप से सम्मान दिया जाता है. इसने खुद को एक भरोसेमंद साझेदार के रूप में स्थापित किया है, जिसका एक आकर्षक बाजार है और यह दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्था बनी हुई है. महत्वपूर्ण और व्यापक सुधारों, व्यवसाय करने में आसानी में सुधार, छोटे अपराधों को अपराध मुक्त करने और पीएम के वैश्विक व्यक्तित्व ने भारत को एक आकर्षक निवेश गंतव्य के रूप में स्थापित किया है. आज, दुनिया भारत की विकास कहानी का हिस्सा बनना चाहती है—और एफटीए पर हस्ताक्षर करना चाहती है. इन व्यापार समझौतों ने घरेलू बाजार को भी धीरे-धीरे खोलना सुनिश्चित किया है. इससे भारतीय बाजार अधिक प्रतिस्पर्धी होगा और स्थानीय निर्माता उच्च गुणवत्ता वाले सामान प्रतिस्पर्धी कीमतों पर बनाने के लिए प्रोत्साहित होंगे, जो प्रधानमंत्री के विकसित भारत मिशन का एक मुख्य तत्व है.

यूके के साथ ऐतिहासिक व्यापार समझौता, जो 15 जुलाई से लागू होगा, भारतीय किसानों, एमएसएमई, मछुआरों, स्टार्टअप और कारीगरों के लिए वैश्विक अवसर और समृद्धि लाएगा. यह नौकरियां सृजित करेगा और भारतीय नागरिकों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले सामान को उचित कीमतों पर उपलब्ध कराएगा, जिससे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत 2047 मिशन को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी. भारत और यूके के बीच परिवर्तनकारी व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौता(सीईटीए) भारतीय वस्तुओं के लिए यूके में सभी क्षेत्रों में, विशेष रूप से श्रम-प्रधान क्षेत्रों में, व्यापक बाजार पहुंच सुनिश्चित करेगा.

दोनों पक्षों के लिए फायदेमंद यह समझौता लगभग 100त्न व्यापार मूल्य को शामिल करते हुए लगभग 99 प्रतिशत टैरिफ लाइनों पर तुरंत शुल्क समाप्त करेगा, जिससे भारतीय निर्यात के लिए अपार अवसर सृजित होंगे. सीईटीएएक जन-केंद्रित समझौता है, जिस पर पिछले साल प्रधानमंत्री मोदी और ब्रिटिश प्रधानमंत्री सर कीर स्टारमर की उपस्थिति में हस्ताक्षर किये गये थे. यह समाज के हर हिस्से को फायदे देता है. किसानों को अपने घरेलू हितों से समझौता किए बिना उच्च मूल्य वाले निर्यात बाजारों तक पहुंच मिलेगी. मछुआरों को विशाल यूके बाजार में अधिक सीफ़ूड निर्यात से फायदा मिलेगा. श्रमिकों को श्रम-गहन क्षेत्रों में नई नौकरियों के अवसर मिलेंगे. महिला उद्यमी, युवा, स्टार्टअप्स और एमएसएमई को वैश्विक मूल्य-श्रृंखला तक बेहतर पहुँच मिलेगी. पेशेवरों को बेहतर आवागमन और मान्यता के अवसरों से फायदा मिलेगा. सीईटीएभारतीय किसानों के लिए प्रीमियम यूके बाजार खोलता है, जो दूसरे यूरोपीय देशों को मिलने वाले फायदों के बराबर या उनसे भी बेहतर है. हल्दी, काली मिर्च, इलायची और प्रसंस्कृत सामान जैसे आम का गूदा, अचार और दालों को शुल्क -मुक्त पहुँच प्राप्त होगा.

उच्च कृषि निर्यात से किसानों की आय बढ़ेगी और गुणवत्ता, पैकेजिंग और प्रमाणन के लिए और प्रोत्साहन मिलेगा. यह कृषि मूल्य श्रृंखला में कई नौकरियाँ भी पैदा करेगा. साथ ही, सीईटीएघरेलू किसानों - खासकर डेयरी उत्पाद, खाद्यान्न, मोटे अनाज,सेब, ओट्स और खाद्य तेल से जुड़े किसानों - की सुरक्षा के लिए भारत के सबसे संवेदनशील कृषि क्षेत्रों को अपने दायरे से बाहर रखता है. इन्हें समझौते से बाहर रखना,मोदी सरकार की खाद्य सुरक्षा, घरेलू मूल्य स्थिरता और कमजोर कृषि समुदायों को प्राथमिकता देने की रणनीति को प्रतिबिंबित करती है.

यूके के विशाल बाजार तक तुरंत शुल्क-मुक्त पहुंच भारतीय निर्माण को बढ़ावा देगी, जिससे पारंपरिक कारीगर, बड़े कारखाने और क्षेत्रीय औद्योगिक केंद्र प्रभावी तरीके से प्रतिस्पर्धा कर सकेंगे. छोटे व्यवसायों को फायदा होगा, क्योंकि भारतीय उत्पादों को अपने प्रतिद्वंद्वियों पर प्रतिस्पर्धा से जु ?ी स्पष्ट बढ़त मिलेगी. फुटबॉल, क्रिकेट गियर, रग्बी बॉल और खिलौने बनाने वाली कंपनियां, अन्य उत्पादों के साथ-साथ, यूके में अपने व्यवसाय को काफी विस्तार देने में सक्षम होंगी।शुल्कों को हटाने से खासकर श्रम-सघन क्षेत्रों में लंबे समय से चल रही टैरिफ बाधाओं का समाधान हुआ है, जिससे निर्यात प्रतिस्पर्धा और पैमाने में तुरंत लाभ होने की उम्मीद है. तिरुपुर के करघों से लेकर बेंगलुरु की लैब तक, सूरत के हीरे के कारीगरों से लेकर हैदराबाद के कोडर्स तक, यह समझौता असली अर्थव्यवस्था को छूता है।

यूके ने सेवा क्षेत्र में अब तक की अपनी सबसे व्यापक प्रतिबद्धताओं में से एक प्रदान किया है, जिसमें भारत की निर्यात रुचि के सभी प्रमुख सेवा क्षेत्रों और 137 उप-क्षेत्रों को शामिल किया गया है. बेहतर बाजार पहुंच और नियामक सुनिश्चितता भारतीय सेवा प्रदाताओं को आईटी और आईटी-सक्षम सेवाओं, वित्तीय सेवाओं, पेशेवर सेवाओं, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा, इंजीनियरिंग, दूरसंचार और परामर्श सेवाओं में सहायता करेगी.

(लेखक केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री हैं.)

ग्वालियर चंबल डायरी

मंडलम अध्यक्षों की लिस्ट आते ही कांग्रेस में बवाल, नेताओं पर सवाल

हरीश दुबे

ग्वालियर कांग्रेस में गुटबाजी और कार्यकर्ताओं की अपने ही हठी नेताओं के खिलाफ नाराजगी वैसे तो कोई अनूठी बात नहीं है लेकिन बीते रोज हुई मंडलम अध्यक्ष नियुक्तियों ने फिर एक बार कांग्रेस की कलह को उजागर कर दिया है. राजनीतिक अंत:वीथिकाओं से बाहर निकल कर असंतोष अब सोशल मीडिया पर छितरा रहा है. कांग्रेस आईटी सेल के जिलाध्यक्ष रह चुके तरुण यादव ने तो अपनी पोस्ट में तंज कसते हुए कांग्रेस के खिलाफ चुनाव लड़ने वालों को मंडलम अध्यक्ष बनाए जाने पर डबल बधाई दे दी है. ऐसे वक्त जब साल भर के भीतर निकाय चुनाव होने हैं और पार्टी में बूथ मजबूत करने के लिए गाल बजाए जा रहे हैं, तमाम मंडलम में जनाधारविहीन और स्थानीय छत्रपों की चाकरी करने वालों को थोपे जाने से कांग्रेस के वह जमीनी कैडर हताश है जो पार्टी के आंदोलनों में झंडा डंडा लेकर आगे चलता रहा है और पुलिस की लाठियां भी खाता है. जिलाध्यक्ष भले ही सुरेन्द्र यादव हैं लेकिन मंडलम अध्यक्षों की नियुक्तियों में ग्वालियर शहर की तीनों विधानसभा सीटों के एकछत्र राजा बने नेताओं की ही चली है.

छत्रपों की दलील है कि उन्हें ढाई साल बाद विधानसभा चुनाव लड़ना है, लिहाजा उन्हें चुनावी हित अहित का भी ध्यान रखना है. इसके उलट पार्टी कार्यकर्ताओं का आरोप है कि संगठन ने जमीनी कार्यकर्ताओं को दरकिनार कर ऐसे लोगों को मंडलम अध्यक्ष का प्रभार सौंप दिया है जो निष्क्रिय हैं और वरिष्ठ नेताओं ने अपनी पसंद के लोगों को पद बांट दिए हैं, जिससे निष्ठावान और पुराने कार्यकर्ता अब भाजपा से लड़ने में वक्त जाया करने के बजाए अब घर बैठने के बारे में सोचने लगे हैं. कई क्षेत्रों में यह शिकायतें भी सामने आई हैं कि पार्टी से बाहर के नेताओं के इशारे पर नियुक्तियां की गईं. सच्चाई यह भी है कि ग्वालियर-चंबल संभाग में कांग्रेस अलग-अलग गुटों में बंटी हुई है. हर गुट अपने समर्थकों को मंडलम अध्यक्ष बनवाना चाहता था, यही वजह है कि नियुक्तियों के बाद विरोध प्रदर्शन और विवाद की स्थिति बनी है. बहरहाल, संगठन के इस तरह के फैसलों को लेकर कार्यकर्ताओं की नाराजगी भोपाल और दिल्ली तक पहुंच गई है. क्या चुनावी तैयारियों से पहले कांग्रेस इस असंतोष को संभाल पाएगी ?

कांग्रेसी विष्णुकांत अब कॉकरोच के भेष में

विष्णुकांत शर्मा कांग्रेस में हैं और आज भी अपनी कांग्रेसियत से इंकार नहीं करते लेकिन उन्होंने अब कॉकरोच जनता पार्टी का परचम थाम लिया है. आज उन्होंने इसी नए राजनीतिक मंच के बैनर तले नीट परीक्षा के पेपर लीक और धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे की माँग को लेकर प्रेस कॉन्फ्रेंस की. कांग्रेस में रहते हुए कॉकरोच जनता पार्टी से जुड़ने के सवाल पर विष्णुकांत का जवाब है कि वे सबसे पहले भारतीय हैं, फिर अंबेडकरवादी हैं और बच्चा बचाओ आंदोलन पहले से ही चला रहे हैं, चूंकि कॉकरोच पार्टी ने देश के बच्चों के भविष्य से जुड़ा मुद्दा उठाया है, इसलिए उन्होंने इससे जुड़ना उचित समझा.

विष्णुकांत दलील देते हैं कि केजीपी कोई रजिस्टर्ड राजनीतिक दल नहीं है बल्कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म है, लिहाजा दलीय निष्ठाओं पर सवाल नहीं उठाया जा सकता है. कांग्रेस की सदभावना एवं कौमी एकता प्रकोष्ठ के अध्यक्ष रह चुके विष्णुकांत एक बार पार्टी से बाहर और 2018 में विधानसभा का चुनाव निर्दलीय भी लड़ चुके हैं, बाद में कांग्रेस में वापसी हो गई थी. अन्ना से जुड़े रहे और अब गांधीवादी संगम चलाते हैं.

ग्वालियर आ रहे हैं पप्पू यादव

पप्पू यादव आज ग्वालियर आ रहे हैं, लिहाजा कांग्रेस में हलचल है. उन्होंने पिछला चुनाव कांग्रेस से टिकट न मिलने पर बगावत कर निर्दलीय लड़ा था और छठवीं बार सांसद निर्वाचित हुए थे. बाद में उन्होंने अपनी जन अधिकार पार्टी का कांग्रेस में विलय कर दिया था. हालांकि पप्पू का मप्र या चंबल की सियासत से कोई सीधा सरोकार नहीं है लेकिन उन्हें युवक कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव मितेंद्र दर्शन सिंह ग्वालियर लेकर आ रहे हैं. युवक कांग्रेस इन दिनों छात्रों की गूँज अभियान चलाकर नीट, सीबीएसई और पेपर लीक जैसे मुद्दे, शिक्षा व्यवस्था में सुधार, रोजगार, प्रतियोगी परीक्षाओं की पारदर्शिता आदि विषयों पर चर्चा के लिए युवा संवाद कार्यक्रम चला रही है. पप्पू यादव का दौरा इसी सिलसिले में है.

10 साल में 7 पीएम, बड़ी नाइंसाफी है!

अंग्रेजों को शर्म से पानी-पानी हो जाना चाहिए! हमारे नरेंद्र मोदी 12 वर्ष से लगातार प्रधानमंत्री हैं. नेहरू 1947 से 1964 तक 17 वर्ष लगातार पीएम रहे. इंदिरा गांधी 1966 से 1977 और फिर 1980 से 1984 तक प्रधानमंत्री रहीं. उन्होंने कुल 15 वर्ष शासन किया. दूसरी ओर बेचारा आफत का मारा ब्रिटेन है, जहां 10 वर्ष में 7 प्रधानमंत्री देखे गए. कंजरवेटिव पार्टी या अनुदार दल के 5 प्रधानमंत्री थे- डेविड कैमरून, थेरेसा मे, बोरिस जॉनसन, लिज ट्रस, ऋषि सुनक. अब लेबर पार्टी या श्रमिक दल के कीर स्टार्मर को पीएम पद छोड़ना पड़ा. उनकी जगह उसी पार्टी के एंडी बर्नहम पीएम बनने जा रहे हैं. कब तक पद पर रहेंगे, इसकी कोई गारंटी या वारंटी नहीं है. रहेगी भी कैसे! एक समय कहते थे कि अंग्रेजों के राज में कभी सूरज नहीं डूबता जबकि भारत पर 2 सदियों तक राज करने वाला ब्रिटेन अब इस तरह कमजोर हो गया है कि खो-खो के खेल के समान पीएम खिसकते चले जा रहे हैं. स्टार्मर 717 दिनों तक तो लिज ट्रस ने सिर्फ 49 दिनों तक प्रधानमंत्री पद संभाला. जो नेता खो दे जनता का विश्वास, वह पीएम पद पर कैसे रहे आबाद! ब्रिटेन ने ब्रेग्जिट जनमत संग्रह कर 10 वर्ष पहले यूरोपियन यूनियन से जुदा होने का फैसला किया. इसके बाद ब्रिटेन में राजनीतिक अस्थिरता आई और उसकी हालत पतली होती चली गई. अब 57 प्रतिशत ब्रिटिश मानते हैं कि यूरोपियन यूनियन या ईयू को छोड़ने का फैसला गलत था. ईयू के साथ ईलु-ईलु जारी रखना चाहिए था. दूसरी ओर 11 प्रतिशत अंग्रेज मानते हैं कि इन 10 वर्षों में उनकी जिंदगी बेहतर हुई है. भारत में भी संक्षिप्त कार्यकाल वाले कुछ प्रधानमंत्री हुए, जिनमें चौधरी चरणसिंह, चंद्रशेखर, एचडी देवेगौड़ा, इंद्रकुमार गुजराल शामिल हैं. अटलबिहारी का रिकार्ड 3 बार पीएम बनने का रहा. पहले 13 दिन की, फिर 13 महीने की और बाद में 5 वर्ष तक सरकार का नेतृत्व किया. उन्होंने कहा था कि मैं ऐसी सत्ता को चिमटे से भी छूना पसंद नहीं करूंगा, जो जोड़-तोड़ कर बनाई गई हो. अब जोड़तोड़ नहीं, पार्टियां फोड़कर सत्ता सिंहासन को मजबूत किया जाने लगा है, जिसे स्वर्ग से देखकर अटल नमो नमो का मंत्र जप रहे होंगे. बहरहाल, ब्रिटेन को देखकर कहा जा सकता है कि 10 साल में 7 पीएम, बड़ी नाइंसाफी है!

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

जहां दिखे फायदा, उस ओर चल इसीलिए होता है इतना दलबदल

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, कहते हैं कि जमाने की ठोकरें खाने के बाद इंसान को अक्ल आती है. अपने देश के सांसदों-विधायकों को दिव्य ज्ञान कब और कैसे प्राप्त होता है? कब उनकी आंखें खुलती हैं? क्या वे किसी सत्संग में जाते हैं?'

हमने कहा, 'जब उन्हें अपनी पार्टी का नेतृत्व पसंद नहीं आता और दूर के ढोल सुहावने लगने लगते हैं, तब उन्हें अचानक आत्मज्ञान होता है कि वह अब तक गलत जगह पर थे. उन्हें नई मंजिल और नई राहें दिखने लगती हैं. बंगाल विधानसभा चुनाव में टीएमसी की हार होने पर इस पार्टी के 20 सांसदों को ममता बनर्जी का नेतृत्व कमजोर तथा अभिषेक बनर्जी का व्यवहार तानाशाहीपूर्ण नजर आने लगा. शिवसेना (उबाठा) के सांसदों को एकनाथ शिंदे की शिवसेना प्यारी लगने पर उन्हें दिव्य अनुभूति हुई कि उद्धव ठाकरे राजनीतिक रूप से अक्षम और निर्षक्रय हैं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, इसी तरह आम आदमी पार्टी के 10 में से 7 राज्यसभा सदस्यों को अरविंद केजरीवाल का नेतृत्व भ्रष्ट लगने लगा. उत्तर प्रदेश विधानसभा का चुनाव फरवरी 2027 में हो सकता है. वहां भी सपा के 37 सांसदों में से अनेक को अखिलेश यादव में दोष नजर आने लगे. दलबदल करने वाले नेताओं को अपनी पुरानी पार्टी करेले के समान कड़वी लगने लगती है. वह मन ही मन भगवे का चिंतन करते हुए भाजपा का भजन गाने लगते हैं. उन्हें लगता है कि जब ऋतुएं बदलती हैं, मौसम बदलता है, इंसान रोज कपड़े बदलता है, तो निष्ठा और दल बदलने में कौन-सा हर्ज है! एक ही ठिकाने पर रहने से इंसान की पूछ-परख और इज्जत नहीं रह जाती. वह घर की मुर्गी दाल बराबर बन जाता है. ऐसे में सांसदों-विधायकों का दिल होता है कहीं और चल! उनके मन में नमो नमो की मंगलमय ध्वनि गूंजने लगती है. उनकी अगली चाह और राह का मार्गदर्शन शाह करते हैं.'

हमने कहा, 'अपना राजनीतिक भविष्य जहां उज्ज्वल दिखाई दे, वहां तुरंत चले जाना चाहिए. लुढ़कने वाले पत्थर को काई नहीं लगती. बहता हुआ पानी हमेशा स्वच्छ रहता है. राजनीति जनसेवा का मुखौटा लगाकर अपने स्वार्थ या मतलबपरस्ती के लिए की जाती है. खट्टे अंगूर तो लोमड़ी भी नहीं खाती!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12299 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3		4	■	5	6
7			■	8			
	■		■		■	9	
■	10	■	11		12	■	
13		14		■		■	■
	■		■	15		16	17
18	19			■	20		
21		■	■	22			■

बाएं से दाएं
1.आदमी की लंबाई के बराबर लंबा (उर्दू) 5. अच्छा होता यदि (उर्दू) 7. सेना का वह खाद्य पदार्थ जो उसके साथ रहता है 8. किसी बात अथवा वस्तु को दी गई अधिमान्यता, प्रेफरेंस 9. दान करने वाला, उदार 13. अर्थनीति विषयक वह शास्त्र जिसमें धनोपार्जन रक्षण एवं वृद्धि का विधान हो या इन सिद्धांतों की विवेचना हो 15. जिसका नाश न हो, चिरस्थायी 18. ताज की तरह का, बादशाह 20. बंदर 21. दही मथने की लकड़ी, मथानी 22. खाई

ऊपर से नीचे
1. आईना, दर्पण, शीशा 2. दो अंकों की सबसे बड़ी संख्या 3. अफीम के सत से बनने वाला एक विशेष पदार्थ जो तंधबाकू के समान पिया जाता है 4. जलाना 5. नियम, दस्तूर, रीति 6. बुड्ढा आदमी, श्वसुर 10. राजा, अर्जुन के लिए प्रयुक्त होने वाला नाम 11. एक प्राचीन देश 12. तर्क-वितर्क, किसी पक्ष के खंडन या मंडन में प्रयुक्त होने वाली बातचीत 13. पुराणों के अनुसार देवताओं का मानव शरीर धारण करना 14. सरस्वती एक प्रकार की वीणा 16 सिक्ख संप्रदाय के संस्थापक महात्मा 17. नुकीला, तेज (सं.) 19. जौ की तरह का एक अन्न, अंकुर

Solution 12298

ह	त	बां	ध	व	■	वि	दा
ला	■	झ	न	■	स	न	द
का	ना	■	ह	स	र	त	■
न	ट	व	र	ला	ल	■	क
■	क	र्ण	■	म	■	अ	क्ष
आ	शा	■	क	त	र	ना	■
शि	ला	जी	त	■	सा	द	गी
क	■	त	रा	ई	■	र	त

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में स्त्री पक्ष से नवीन समाचार की प्राप्ति होगी, सुख प्राप्त होगा, नवीन मित्र से भेंट होगी, व्यापार के क्षेत्र में यात्रा की रूपरेखा बनेगी, वर्ष के प्रारंभ में शासन सत्ता का लाभ प्राप्त होगा, शिक्षा में रूचि रहेगी, मित्रों एवं भाईयों के सहयोग से राजनैतिक लाभ प्राप्त होगा, वर्ष के अन्त में भूमि भवन संबंधी विवाद का सामना करना पडेगा, व्यर्थ के विवाद एवं मतभेद बढेंगे.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा, शिक्षा में रूचि रहेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ वाद विवाद हो सकता हे, शिक्षा में व्यवधान के कारण मानसिक परेशानी होगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को मित्र एवं भाईयों के सहयोग से राजनैतिक लाभ प्राप्त होगा, व्यापार के क्षेत्र में लाभ का योग है,मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मित्र से भेंट होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन संबंधी विवाद का सामना करना होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक गौरवर्ण का दुबला पतला, माता पिता का आदर करने वाला होगा. नौकरी एवं व्यवसाय दोनों में अच्छी तरह तरक्की करेगा, गणित एवं विज्ञान के क्षेत्र में अच्छी उन्नति होगी, अपने कार्य में दूसरों का हस्तक्षेप पसंद नहीं करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

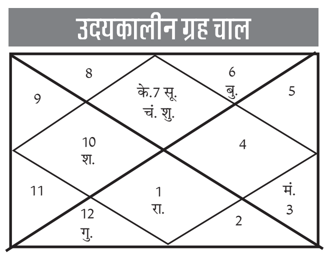

पंचांग

रा.मि. 04 संवत् 2083 शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी गुरूवासरे रात 9/14, स्वाती नक्षत्रे शाम 6/22, शिव योगे दिन 1/28, वणिज करणे सू.उ. 5/13, सू.अ. 6/47, चन्द्रचार तुला, पर्व- निर्जला एकादशी व्रत, शु.रा. 7,9,10,1,2,5 अ.रा. 8,11,12,3,4,6 शुभांक- 9,2,6.

व्यापार भविष्य

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी को स्वाती नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, के भाव में मंदी की चाल चलेगी, तिल, सरसों, जौ, गुड़, खांड़, चना आदि में मंदी होकर अचानक तेजी होगी. भाग्यांक 3695 है.

मेष- निजी कार्य को टालने से समस्या बढ़ेगी, झगड़ों से परेशान होकर काम छोड़ने का मन बनेगा, कार्यसिद्धि के लिये दौड़धूप करना होगी, मित्रों का सहयोग मिलेगा.

वृषभ- कैरियर की सफलता के लिये सही समय का इंजतार करें, धार्मिक कार्यों पर रूचि रहेगी, शारीरिक कष्ट से छुटकारा मिलेगा, पुराना पैसा प्राप्त होगा.

मिथुन- टालमटोल के चलते कामकाज में परेशानी होगी, सावधानी रखकर कार्य करें, हितकर रहेगा, लापरवाही करने पर नुकसान हो सकता है.

कर्क- मांगलिक कार्य संभव है, कार्यक्षेत्र में अपमान हो सकता है, संतान पक्ष को सफलता मिलेगी, सहयोग लाभकारी रहेगा, सामाजिक कार्यो में लगाव रहेगा.

सिंह- कामकाज के सिलसिले में यात्रा हो सकती है, वैभव विलासिता के कार्यो में खर्च होगा, बिगड़े कार्यो में सुधार होगा, रोजगार के कार्यो में वृद्धि होगी.

कन्या- मित्रों के साथ मौजमस्ती में समय व्यतीत होगा, आकस्मिक लाभ संभव है, मानसिक शांति मिलेगी, शादी विवाह के कार्यो में सफ्लता का योग है.

तुला- नजदीकी लोगों के कारण भागदौड़ बढ़ सकती है, आप जोखिम उठाने के लिये तैयार रहेंगे, आय के साधनों में वृद्धि होगी, रोजगार आदि की प्राप्ति होगी.

वृश्चिक- आप जैसा चाहेंगे, वैसा हो पाना मुश्किल है, विरोधी वर्ग प्रबल होगा, भागदौड़ अधिक करनी होगी. अनावश्यक विवादों को टालना हितकर रहेगा.

धनु- घरेलू आयोजन में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेंगे, पुराने पेंडिंग कार्य पूरे होंगे, माता पिता की आशाओं की पूर्ति होगी, व्यापार की स्थिति संतोषजनक रहेगी.

मकर- कानूनी मामले आपसी बातचीत से सुलझेंगे, कामकाज में परिवार का अच्छा सहयोग रहेगा, अधिनस्थ लोगों का विरोध बढ़ सकता है.

कुम्भ- बड़ी जिम्मेदारी पूरी होने से प्रसन्नता होगी, पुराना कर्ज चुकता होने की संभावना है, शुभ समाचार मिलेगा, कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी, वाणी प्रभावशाली रहेगी.

मीन- नए सौदे लाभकारी रहेंगे, दौड़धूप से रूका कार्य अच्छी तरह बन जायेगा, भूमि भवन संबंधी मामलों में विजय मिलेगी, वाहन का सुख मिलेगा.

SUDOKU 7431

4	6		3		8	9		7
	1		9		6		5	4
						8		
	4		5				8	
2		5		4		6		1
	3				1		7	
		3						
5	9		7		2		6	
7		6	4		3		9	2

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7430

5	7	2	3	8	4	1	9	6
8	6	1	9	2	5	7	3	4
3	9	4	1	6	7	5	8	2
2	5	7	4	1	3	8	6	9
4	8	6	5	9	2	3	7	1
1	3	9	6	7	8	4	2	5
6	2	3	7	4	1	9	5	8
9	4	5	8	3	6	2	1	7
7	1	8	2	5	9	6	4	3